गुजरात के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित "श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार-२०१९" वितरण समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी का संबोधन। (05092019)

।।ॐ *असतो मा* सद्गमय। तमसो *मा* ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय।। ॐ शांति, ।।

- आज शिक्षक दिवस है तथा पुरा देश शिक्षकों का सम्मान कर रहा है। हमारे पूर्व राष्ट्रीय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् जी के जन्म दिवस पर आज हम सभी आत्ममंथन करने के लिए यहाँ एकत्रित हैं।

- हमारी प्रदेश सरकार शिक्षा के क्षेत्र में कई सुविधाएं दे रही है तथा राष्ट्र के विकास के लिए नई पीढ़ी को तैयार करने के लिए संनिष्ठ प्रयत्न कर रही है। इसके लिए मैं प्रदेश सरकार को तथा माननीय मुख्यमंत्रीजी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

- भाइयों और बहनों, में स्वयं एक शिक्षक हूँ। इसीलिए में भी आपके परिवार का एक हिस्सा हूँ। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में एक गुरुकुल है जहां देश के 19 प्रांतों के 1500 बच्चे आवासीयरूप से पढ़ते है। इस संस्थान में 35 वर्ष तक प्रधानाचार्य रहा हूँ।

- हम उस देश के लोग हैं, जहां आध्यात्मिक रूप से शिक्षा के क्षेत्र में भारत विश्व का गुरु रहा है। हमारे आदि ऋषियों तथा मनुष्योंने दुनिया के देशों को संबोधित करते हुये आह्वाहन किया था कि आप सभी अध्ययन करने के लिए भारत की पवित्र धरा पर आओ और यहाँ गुरुजनों के चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण करो। इस तरह हमारा यह देश कई वर्षो तक परा तथा अपरा दोनों प्रकार की विद्याओं का अध्ययन केन्द्र रहा। आजकल हमारे बच्चे England, Australia, Canada में जाकर पढ़ते है तो इसे हम हमारा सौभाग्य मानते है, परन्तु एक समय था जब हमारे तक्षशिला, नालंदा जैसे विश्वविद्यालय पुरी दुनिया के लिए शिक्षा के केन्द्र थें।

- हमारे देश में गुरुओं का स्थान पहले से ही बड़े आदरभाव का रहा है। उपनिषदों के अनुसार "मातृ देवो भव:", "पितृ देवो भव:", "अतिथि-देवो भव:" के साथ-साथ "आचार्य देवो भव:" ऐसा भी कहा गया है। गुरु वो दीपक है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। हम सभी शिक्षक उसी परंपरा के लोग है जहां गुरु और शिष्य आपस में एक-दूसरे के प्रति समर्पण भाव से शिक्षा का आदान-प्रदान करते है।

- माँ-बाप अपने प्यारे बच्चों को स्कूलों में अध्यापकों के पास छोड़ देते है इसी विश्वास के साथ के उनके बच्चे स्कूलों में संस्कारों के साथ अच्छी विद्या ग्रहण करेंगे तथा संस्कारी नागरिक बनेंगे। माँ-बाप का यह विश्वास यदि हम निभा नहीं सकते हैं तो इससे बड़ा पाप दुनिया में और कोई नहीं हो सकता।

- 'शतपथ' ब्राह्मण नाम के ग्रंथ में लिया गया है कि बालक के तीन गुरु होते है – माता, पिता तथा आचार्य। गुजरात की धरती पर स्वामी दयानंद सरस्वती नाम के एक महान पुरुष पैदा हुये थे जिन्होंने कहाँ था कि धन्य है वो संतान जिनको माता-पिता और गुरु मिलते है। ऐसे गुरु-शिष्य यदि आपस में मिल जाते है तो उससे राष्ट्र का निर्माण होता है, परिवारों का कल्याण होता है तथा मानव समाज का निर्माण एक नई गति से होता है।

- नेताजी सुभाषचन्द्र बोझ ने कहा था कि राष्ट्रो का निर्माण रेल की पटरियाँ बिछाने से नहीं, नदियां या नाले बनाने से नहीं, कारखाने खड़े करने से नहीं या भव्य भवनों से नहीं होता, मगर माताओं के सपूतों से तथा संस्कारवान युवा पीढ़ी के घड़तर से होता है और यही जिम्मेवारी समाज ने हम सभी शिक्षको को दी है। हमारे हाथ में आनेवाले बालक कुंभार के हाथ में आनेवाली कच्ची मिट्टी की तरह होते है। जिस प्रकार से एक

कुंभार अपने हाथ में आई हुई कच्ची मिट्टी को जैसा चाहे वैसा आकार दे सकता है, वैसे ही शिक्षक बालकों के चारित्र्य घड़तर करने में अपनी यशस्वी भूमिका निभा सकता है।

- मेरे प्यारे अध्यापक भाईयों और बहनों। आज का अवसर हम सभी के लिए चिंतन का अवसर है। आज हम एक संकल्प लेकर उठेंगे कि जो जिम्मेवारी हमें मिली है तथा जिस अध्यापक के पेशे को हमने चुना है तो हम यह काम पुरी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा तथा राष्ट्र भावना से करेंगे। यही ईश्वर पूजा है। इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है। हमारे द्वारा तैयार किया गया बालक यदि अच्छा बन गया तो वो सबको सुख देगा, यदि वो गलत बन गया तो सभी को दु:ख का कारण बनेगा। इसलिये हमे अच्छे बालकों के निर्माण के लिए दृढ़ संकल्प होकर पुरी ईमानदारी से आगे बढ़ना होगा।
- आज के इस पवित्र अवसर पर हमारे कुछ श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया गया है। में आप सभी को नमन करता हूँ और बधाई भी देता हूँ। अच्छे काम के लिए प्रोत्साहन मिलना ही चाहिए जिससे ओर प्रेरणा लेकर आप सभी आगे बढ़ सके। जिनको सन्मान किया है उनको बधाई हैं। जो बाकी रह गए वो इससे प्रेरणा लेंगे और भविष्य में आगे बढ़ने में प्रयासरत रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ, आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।